Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ
اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

(सूरः यूनुस **:18)**

अनुवाद : अतः उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ बोला उसकी आयात को झुठलाया। वास्तविकता यही है कि अत्याचारी कभी सफल नहीं हुआ करते।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 24

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

06 ज़िल् हज्जा, 28 ज़ुल्कादा, 1445 हिज्री कमरी, 6 अहसान 1403 हिज्री शम्सी, 13 जून 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

(2581) हज़रत सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है किरसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ दो टोलियों की सूरत में थीं। एक में सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा, हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा, सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा और सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा शामिल थीं और दूसरी में उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा और बाक़ी पत्नियाँ और मुस्लमानों को यह इलम हो चुका था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा को ज़्यादा महबूब रखते हैं, तो जब उनमें से किसी के पास कोई ऐसा हदया होता जिसे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करना चाहते थे तो वह उसे पेश करने में उस वक़्त का इंतेज़ार करते जब किरसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में होते।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल् आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि इमाम इब्ने हजर ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सुंदर आचरण से संबंधित एक सुंदर वर्णन किया है कि अख़लाक़-ए-फाज़िला, भेंट इत्यादि भिजवाने के विषय में किसी को हिदायात देने में रोक हैं। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा से यह फ़रमाते कि एक बीवी की बारी से तख़सीस न की जाए जिस बीवी के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा हों वहां भेंट भेज दिया जाए तो इस में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हदया भेजे जाने का इशारा होता, इसलिए हुज़ूर ने उसे भी गवारा नहीं फ़रमाया और ख़ामोशी इख़तेयार की। हदया देने या न देने में हर शख़्स आज़ाद है, जिसे चाहे दे या न दे। ऐसी बातों में मुदाख़िलत या फ़र्माइश नज़ाहत नफ़स और ख़लक़ अज़ीम के मुनाफ़ी है। औरतों को अदल के बारे में भी ग़लतफ़हमी थी। अदल का ताल्लुक़ ख़ावंद की ज़ात से है न दूसरे लोगों की मर्ज़ी से।

(बुख़ारी किताब अल् हिबा बाब मन हदा इला साहाबा)

★ ★ ★

बड़ा बेईमान है वह शख़्स जो क़ुरआन की तरफ़ ध्यान न दे और दूसरी किताबों पर ही रात-दिन झुका रहे

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यदि हमारे पास क़ुरआन नहीं होता और हदीसों के ये मजमुए मायानाज़ ईमान और एतेकाद होते तो हम कौमों को शर्मसारी से मुँह भी नहीं दिखा सकते। मैंने क़ुरआन के शब्द में ग़ौर की तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक लफ़्ज़ में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है। वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के योग्य किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा यही पढ़ने के योग्य किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इसके साथ शरीक की जाएंगी। उस वक़्त इस्लाम की इज़्ज़त बचाने के लिए और झूठों का इस्तसाल करने के लिए यही एक किताब पढ़ने के योग्य होगी और अन्य किताबें पूर्णतः छोड़ देने के योग्य होंगी। फ़ुर्क़ान के भी यही अर्थ हैं अर्थात यही एक किताब हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाली ठहरेगी और कोई हदीस की या और कोई किताब इस हैसियत और पाया की नहीं होगी। (फ़रमाया और बड़े जोश और ताकीद से कि) अब सब किताबें छोड़ दो और दिन रात किताबुल्लाह ही को पढ़ो। बड़ा बेईमान है वह व्यक्ति जो क़ुरआन की तरफ़ इलतेफ़ात न करे और दूसरी किताबों पर ही रात-दिन झुका रहे। हमारी जमात को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और दिल से व्यस्त हो जाएं और हदीसों के शुग़ल को तर्क कर दें। बड़े खेद का स्थान है कि क़ुरआन-ए-करीम का वह सम्मान और पाठन नहीं किया जाता जो अहादीस का किया जाता है। इस वक़्त क़ुरआन-ए-करीम का हर्बा हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है। उस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 9 ऐडीशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

मस्जिद मोमिनों के इकट्ठे होने का स्थान होती है और दुआओं और खुदा उपासना करने का स्थान होती है
ऐसे स्थान से कोई सच्चा इशक़ और ताल्लुक़ रखने वाला इन्सान जुदा ही नहीं हो सकता

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः अल्-हज आयत : 27

وَاِذۡ بَوَّاۡنَا لِاِبۡرٰهِيۡمَ مَكَانَ الۡبَيۡتِ اَنۡ لَّا تُشۡرِكۡ بِىۡ شَيۡـًٔا وَّطَهِّرۡ بَيۡتِىَ لِلطَّآئِفِيۡنَ وَالۡقَآئِمِيۡنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوۡدِ

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

चूँकि दुनिया की समस्त मसाजिद भी बैतुल्लाह हैं क्योंकि वे भी ख़ुदा तआला के वर्णन के लिए विशेष होती हैं और बैतुल्लाह के ज़िल् के तौर पर ही अल्लाह तआला ने उन्हें क़ायम फ़रमाया है इसलिए कि यह अहकाम केवल बैतुल्लाह के लिए ही विशेष नहीं बल्कि हर मस्जिद पर भी ज़िल्ली तौर पर चस्पाँ होते हैं।

इस नुक़्ता निगह से अगर ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है कि इस आयत में मसाजिद की तीन अहम अग़राज़ वर्णन की गई हैं

प्रथम मसाजिद इसलिए बनाई जाती हैं कि मुसाफ़िर उन से फ़ायदा उठाएं।

दोम-मसाजिद इस लिए बनाई जाती हैं कि शहर में रहने वाले उन से फ़ायदा उठाएं।

सोम -मसाजिद इस लिए बनाई जाती हैं कि रुक और सुजूद करने वाले अर्थात अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ करने वाले और तौहीद-ए--कामिल पर क़ायम लोग उन से फ़ायदा उठाएं।

मुसाफ़िर तो मस्जिद से इस रंग में फ़ायदा उठा सकता है

शेष पृष्ठ08 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन्सानी जान की क़दर का तो यह हाल है कि दुश्मन क़बीले के लोगों की जान के लिए यह एक तरकीब निकाली कि एक जान को क़तल करना बेहतर है ताकि उनके बाक़ी लोग बच जाएं। यह इन्सानी हमदर्दी का मिराज है

सरिया उसको कहते हैं जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद शामिल होते थे
लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरों को मुहिम के लिए भेजा करते थे

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि सुफ़ियान बिन ख़ालिद ने मदीना पर हमला करने के लिए लश्कर जमा किया है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मुनफ़रद हकीमाना अस्करी फ़ैसला फ़रमाया कि बजाय उसके कि एक फ़ौज तैयार करके सुफ़ियान के मुक़ाबले के लिए भेजी जाए और दोनों तरफ़ ख़ून बहे ज़्यादा मुनासिब मालूम होगा कि हिकमत-ए--अमली से इस बाग़ियाना लश्कर तैयार करने वाले संस्थापक को ही ख़त्म कर दिया जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस वर्णन करते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुफ़ियान बिन खालिद के विषय में मुझे जो कुछ बताया था उसकी वजह से मैं उसे फ़ौरन पहचान गया क्योंकि उसे देखते ही मुझ पर हैबत तारी हो गई जबकि मैं कभी किसी से नहीं डरता था। इसलिए मैं ने दिल में कहा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच्च कहा था

सरिया हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो, सरिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो और
सरिया रजीअ की रोशनी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत-ए-मुबारका का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

यमन और पाकिस्तान के असीरान-ए-राह मौला और फ़लस्तीन के मज़लूमीन के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 10 मई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने के कुछ सराया का वर्णन करूँगा। इस ज़िमन में पहले क़बीला बनू असद की शरारत और सरिया अबू सलमा का वर्णन होगा। सरिया उसको कहते हैं जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद शरीक नहीं होते थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरों को मुहिम के लिए भेजा करते थे। उनमें भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के पहलूओं पर रोशनी पड़ती है।

इन सराया से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिक्मत और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस जीवनी पर भी रोशनी पड़ती है कि किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों का दिफ़ा करना है और फिर दूसरों अर्थात दुश्मन के लिए भी कितनी हमदर्दी का इज़हार है। बहरहाल यह मुहर्रम 4 हिज्री में हुआ उसकी क़ियादत हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने की।

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया बहग 6 पृष्ठ 424 प्रकाशन दारुसस्लाम रियाज़ 1434 हिज्री)

अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अब्दुल्लाह था और कुनिय्यत अबू सलमा थी। उनकी माता बरा बिंत अब्दुल् मुतलिब थीं और यह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे और हज़रत हम्ज़ह रज़ियल्लाहु अन्हु के रज़ाई भाई भी थे। उन्होंने अबूलहब की लौंडी सौवेबा का दूध पिया था। हज़रत उम्मुल मौमेनीन उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो पहले उन्ही के निकाह में थीं।

(असदुल् गाबा भाग 3 पृष्ठ 295 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वा-ए-बदर और उहद में शामिल हुए। ग़ज़व-ए-उहद में यह ज़ख़मी हुए। एक माह तक उस का ईलाज करते रहे बज़ाहिर वह ज़ख़म अच्छा हो गया और वह ज़ख़म ऐसा मुंदमिल हो गया कि उसे कोई पहचानता नहीं था।

(अल्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 182 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस सरिया की पृष्ठभूमी कुछ यूं है कि मदीना में रहने वाले मुनाफ़ेक़ीन और यहूद जंग-ए-उहद के हालात और वाक़ियात की वजह से ख़ुशीयां मनाने लगे और एक-बार फिर उनके दिल में यह ख़्यालात आने लगे कि मुस्लमानों को जल्द ख़त्म करने के लिए प्लैनिंग की जा सकती है। इसी तरह मदीना के इर्द-गिर्द रहने वाले वे क़बायल जो जंग बदर में मुस्लमानों की अज़ीमुश्शान फ़तह की वजह से ख़ौफ़ज़दा हो गए थे उनके दिलों में भी यह ख़्याल अंगड़ाइयाँ लेने लगा कि उहद में मुस्लमानों को काफ़ी नुक़्सान हो चुका है इसलिए अवसर है कि मुस्लमानों पर हमला करके उनको मज़ीद नुक़्सान पहुंचाया जाए और लूट मार के नतीजा में उनके अम्वाल और दौलत हासिल किए जाएं। इसलिए जंग-ए-उहद को गुज़रे हुए अभी दो माह ही हुए थे कि इन क़बीलों में से जिस क़बीले ने सबसे पहले मुस्लमानों पर हमले का प्रोग्राम बनाया वह बनू असद बिन ख़ुज़ैमा था। ये लोग नजद में रहते थे। इस क़बीले के रईस तुलेहा बिन ख़ूवेलद और इस के भाई सलमा बिन ख़ुवैलद ने लोगों को इकट्ठा करके एक लश्कर तैयार कर

लिया।

बनू असद के एक आदमी क़ैस बिन हारिस बिन उमेर ने अपनी क़ौम को मुस्लमानों पर हमला न करने की नसीहत करते हुए कहा कि हे मेरी क़ौम यह अक्लमंदी की बात नहीं है। हमें मुस्लमानों की तरफ़ से किसी नुक़्सान का सामना नहीं करना पड़ा।

मुस्लमान हमें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा रहे और न ही हम पर मुस्लमानों ने लूट मार के लिए हमला किया है। हमारा इलाक़ा यसरब से दूर है अर्थात मदीना से दूर भी है। हमारे पास क़ुरैश जैसा लश्कर भी नहीं है। क़ुरैश ख़ुद एक अरसा तक अहल-ए-अरब से उनके ख़िलाफ़ मदद मांगते रहे। उन्हें तो उनसे बदला भी लेना था फिर वे ऊंटों पर सवार हो कर घोड़ों की बागडोर सँभाल कर निकले थे। वे तीन हज़ार जंगजूओं और अपने पैरोकारों की एक बड़ी संख्या को साथ लेकर गए थे। बहुत सा असलाह भी लिया था। इसके मुक़ाबले में तुम्हारी क्या हैसियत है? केवल यह है कि तुम बमुश्किल तीन सौ अफ़राद लेकर निकलोगे इस तरह तुम लोग अपने आपको फ़रेब में डाल दोगे अपने इलाक़े से दूर निकल जाओगे और मुझे डर है कि तुम मुसीबत में फंस जाओगे लेकिन उन्होंने क़ैस की नसीहत नहीं मानी। उधर बनू असद के मदीना मुनव्वरा पर हमला करने के मन्सूबा की इत्तिला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक इस तरह पहुंच गई कि क़बीला तै का एक शख़्स वलीद बिन ज़हेर मदीना आया। वह अपनी भतीजी ज़ैनब से मुलाक़ात के लिए आया था जो तुलेब बिन उमेर बिन वहब् रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी थीं। उसने बनू असद के ऊपर वर्णित मंसूबे की इत्तिला दी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला किया कि इस से पहले कि बनू असद मदीना पर हमला करें ख़ुद मुस्लमान अपने तहफ़्फ़ुज़ के लिए उनके इलाक़े पर चढ़ाई करें। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब फ़रमाया और उन्हें इरशाद फ़रमाया कि इस मुहिम पर रवाना हो जाओ। मैं ने तुम्हें उसका निगरान निर्धारित किया है। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए झंडा बाँधा और ये हिदायत फ़रमाई कि बनू असद के इलाक़े तक अपना सफ़र जारी रखो इस से पहले कि उनके लश्कर तुम्हारे ख़िलाफ़ इकट्ठे हो जाएं। वहां पहुंच कर उन पर हमला कर दो। एक सौ पच्चास अस्हाब-ए-करामरज़ियल्लाहु अन्हु पर मुश्तमिल लश्कर अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में इन क़बायल की सरकूबी के लिए रवाना हुआ। क़बीला तै का वह शख़्स अर्थात वलीद बिन ज़हैर बतोर गाईड उनके साथ था, रहबर उनके साथ था।

(उद्धृत सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 422 से 425 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हिज्री)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 34 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस सरिया में शामिल होने वाले चंद सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु के अस्मा ये हैं।

अबू सब्रहबन अबी रहुम, अब्दुल्लाह बिन सुहेल बिन अम्र, अब्दुल्लाह बिन् मखरमा आमिरी, मुअत्तिब् बिन फ़ज़ल, अर्क़म बिन अबी अर्क़म, अबू उबैदा बिन जर्राह, सुहेल बिन बेजा, उसेद बिन हुज़ैर अंसारी, अबअद बिन बिश अंसारी, अबू नायला अंसारी, अबु अय्याश ज़ुराकी, क़तादा बिन नोमान, नज़ीर बिन हारिस, अबूक़तादा अंसारी, अबू अय्याश ज़ुरक़ी, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी, ख़ुबैब बिन साफ़, साद बिन अबी वक्कास, अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा।

(किताब अल्मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 341 आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 424 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हिज्री)

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी इस मुहिम को ख़ुफ़ीया रखते हुए तेज़ रफ़्तारी से आम रस्ते से हट कर चले ताकि जल्द-से -जल्द दुश्मन तक पहुंच जाएं। उन्होंने दिन रात नियमित यह सफ़र किया। एक रिवायत के मुताबिक़ दिन का एक हिस्सा यह छिप जाते और रात को सफ़र करते। यूं चार दिन के सफ़र के बाद वह कत्न पहाड़ के क़रीब पहुंच गए। कत्न के मुताल्लिक़ लिखा है कि यह फ़ैद के क़रीब एक पहाड़ का नाम है और फ़ैद कूफ़ा के रस्ते पर एक मंज़िल का नाम है जहां बनू असद बिन ख़ुज़ैमा का चशमा था। मुस्लमानों ने वहां पहुंचते ही हमला करके उनके मवेशियों पर क़बज़ा कर लिया और उनके चरवाहों में से तीन को पकड़ लिया और बाक़ी भागने में सफ़ल हो गए। इन भागने वालों ने बनू असद के पड़ाव में पहुंच कर मुस्लमानों के लश्कर के पहुंच जाने और उनके हमले की ख़बर दी और अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्कर की संख्या बहुत बढ़ा चढ़ा कर वर्णन की। इन चरवाहों ने भी बहुत मुबालग़े से काम लिया कि इतना बड़ा लश्कर है जिससे उन में और ख़ौफ़ पैदा हो गया। जिससे बनू असद ख़ौफ़ज़दा हो गए और मुस्लमानों के अचानक पहुंच जाने की वजह से ऐसी हैबत तारी हुई कि वे डर के मारे इधर-उधर भाग गए। हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो जब बनू असद के पड़ाव के मुक़ाम पर पहुंचे और उन्होंने देखा कि दुश्मन भाग गया है तो उन्होंने उनकी तलाश में अपने साथियों को भेजा। हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें तीन हिस्सों में तक़सीम किया। एक हिस्सा उनके साथ ठहरा। बाक़ी दोनों को दो मुख़्तलिफ़ अतराफ़ में भेजा और साथ यह भी हिदायत दी कि दुश्मन का पीछा करते हुए ज़्यादा दूर तक न जाएं और अगर दुश्मन से तसादुम नहीं होता तो वापस आकर रात उन्ही के पास क़ियाम करें और यह भी ताकीद की कि मुंतशिर न हों, इकट्ठे ही रहें लेकिन दुश्मन सरासीमा हो कर इतनी तेज़ी से भागा था कि मुस्लमानों का किसी से भी सामना नहीं हुआ। हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त माल-ए-ग़नीमत के साथ मदीना की तरफ़ वापसी का सफ़र शुरू किया। जो शख़्स बतौर राहनुमा साथ गया था वह साथ ही वापस लौटा। एक रात का सफ़र तै करने के बाद हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने माल-ए-ग़नीमत तक़सीम किया। उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ख़ुमस अलैहदा किया। रहबर शख़्स को इस की ख़ुशी के मुताबिक़ माल दिया और बक़ीया माल-ए-ग़नीमत सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु में तक़सीम कर दिया। हर सहाबी को सात सात ऊंट और कई कई बकरियां मिलीं और यूं बाक़ी सफ़र तै करते हुए ये लोग ख़ुशी के साथ क़रीबन दस दिन के बाद वापस मदीना पहुँच गए।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 34 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 425-428 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 511-512)

(एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 253 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 हि)

यह जो मैं ने बताया है और इस में जो हवाला दिया था यह वर्णन मुख़्तलिफ़ तारीख़ों से अख़ज़ किया गया है, सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमका भी कुछ हिस्सा इस में शामिल है। बहरहाल हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो इस सरिया के लिए मदीना से दस से कुछ ज़ायद रातें बाहर रहे। जब मदीना वापस आए तो उनका वह ज़ख़म जो ग़ज़ व-ए-उहद में उनको लगा था दुबारा ताज़ा हो गया जिससे वह बीमार पड़ गए और इसी साल तीन जमादीउल् आखिर को इंतेक़ाल हो गया।

(अल तब्कातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 182 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

बनू असद के जिस रईस तुलेहा बिन ख़ूबेलद का वर्णन हुआ है यह इंतेहाई बहादुर इन्सान था और मशहूर था कि मुल्क अरब में उसे एक हज़ार शहसवार के बराबर समझा जाता है और यह बहुत फ़सीह उल्लिसान था। नौ हिज्री में बनु साद के वफ़द के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उसने इस्लाम क़बूल किया था लेकिन फिर मुर्तद हो गया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ही नबुव्वत का झूठा मुद्दई बन कर फ़ित्ना-ओ-फ़साद का मूजिब बना था और आख़िर कार शिकस्त खा कर अरब से भाग गया था। फिर कुछ अरसा बाद मदीना आकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की और आख़िर दम तक इस्लाम पर साबित क़दमी दिखाई। जंग-ए-क़ादसिया और दूसरी कई इस्लामी जंगों में हिस्सा लेकर अपनी बहादुरी के जोहर दिखाए और इक्कीस हिज्री में एक जंग में शहादत का मकाम पाया।

(इन्साईकलोपीडीया, भाग 6 पृष्ठ 430-431 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 511-512)

अल्लाह तआला ने इस का अंजाम बख़ैर करना था तो आख़िर उसको तौफ़ीक़ मिली और इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर सरिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। हज़रत अबदुल्लाह बिन उन्निस जुहेनी रज़ियल्लाहु अन्हो आँसार में से बनू सलमा के हलीफ़ थे। ये बैअतुल उक्बा सानिया, बदर, उहद और दीगर ग़ज़वात में शामिल हुए। इन अफ़राद में शामिल थे जिन्हों ने बनू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो के बुत तोड़े थे।

(उसोदुल् गाबा भाग 3 पृष्ठ 178 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

(अल् सीरतुल नब्विया ल्ए इब्ने हशाम पृष्ठ 412-419 दारुल मारूफ़ बेरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनेस रज़ियल्लाहु अन्हो शाम में 54 हिज्री या कुछ रिवायात के मुताबिक़ 74 हिज्री में वफ़ात पाई

(असाबा फ़ी तमीईज़ अल्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 14 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

(ओसोदुल गाबा भाग 3 पृष्ठ 178 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

जंग-ए-उहद के वाक़ियात जब मदीना के इर्द-गिर्द क़बायल के लोगों को मालूम हुए तो जिन लोगों ने मुस्लमानों को कमज़ोर समझ कर उन पर हमला करने का मन्सूबा बनाया उनमें से क़बीला बनूअ लहद का सरदार ख़ालिद बिन सुफ़ियान हुज़ली भी था। कुछ रिवायात में इस का नाम सुफ़ियान बिन ख़ालिद है। बहरहाल उसने सोचा कि मुस्लमानों को उहद में ताज़ा-ताज़ा नुक़्सान पहुंचा है तो क्यों न इन की कमज़ोरी से फ़ायदा उठा कर उन पर चढ़ाई कर दी जाए और मदीना में लूट मार कर के उन पर अपनी धाक बिठाई जाए। इस शख़्स के दिल में इस्लाम दुश्मनी कूट कूट कर भरी हुई थी और बेहद मुतकब्बिर था। यह मुक़ाम नख़ला या अर्फ़ात के क़रीब वादी अरुणा में लश्कर तैयार कर रहा था। उसने अपनी क़ौम के जंगजूओं और इर्द-गिर्द के लोगों को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इकट्ठा करने की मुहिम चला रखी थी और मुख़्तलिफ़ क़बीलों से ताल्लुक़ रखने वाले बहुत से लोग उसके पास इकट्ठे भी हो चुके थे

(इन्साईकलोपीडीया भाग 6 पृष्ठ 433 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि सुफ़ियान बिन ख़ालिद ने मदीना पर हमला करने के लिए लश्कर जमा किया है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मुनफ़रद हकीमाना अस्करी फ़ैसला फ़रमाया कि बजाय उसके कि एक फ़ौज तैयार करके सुफ़ियान के मुक़ाबले के लिए भेजी जाए और दोनों तरफ़ ख़ून बहे ज़्यादा मुनासिब मालूम होगा कि हिकमत-ए-अमली से इस बाग़ियाना लश्कर तैयार करने वाले बानीमबानी को ही ख़त्म कर दिया जाए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ख़तरनाक लेकिन अहम कार्रवाई के लिए अपने एक बहादुर सहाबी हज़रत अबदुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो का चुनाव फ़रमाया।

(इन्साईकलोपीडीया भाग 6 पृष्ठ 433-434 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हि)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर सुफ़ियान बिन ख़ालिद के सारे मंसूबे की तफ़सील बताई और फ़रमाया कि ख़ामोशी से जाओ और उस को क़तल कर दो।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 135 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे उस का हुल्या बताए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया जब तुम उस को देखो गे तो तुम पर हैबत छा जाएगी और इस को देखते ही शैतान याद आ जाएगा। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं तो कभी किसी से नहीं डरा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया हाँ ठीक है लेकिन उसे देखकर तुम्हारे रौंगटे खड़े हो जाऐंगे। इसलिए पाँच मुहर्रम चार हिज्री को यह अकेले इस मुहिम पर रवाना हो गए। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं जब मैं अरुणा के मुक़ाम पर पहुंचा जो कि अर्फ़ात के क़रीब एक वादी है तो मैं ने सुफ़ियान को लाठी के सहारे चलता हुआ देखा और इस के पीछे पीछे मुख़्तलिफ़ क़बीलों के वे लोग थे जो उस से वाबस्ता हो गए थे। यह लाठी बुढ़ापे की वजह से ले कर नहीं चल रहा था बल्कि उस ज़माने में रिवाज था कि हाथ में लाठी रखा करते थे। तो बहरहाल अब्दुल्लाह वर्णन करते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के मुताल्लिक़ मुझे जो कुछ बताया था उस की वजह से में उसे फ़ौरन पहचान गया क्योंकि उसे देखते ही मुझ पर हैबत तारी हो गई जबकि मैं कभी किसी से नहीं डरता था। इसलिए मैं ने दिल में कहा अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने सच्च कहा था। तब अस्र की नमाज़ का वक़्त था इसलिए मुझे डर हुआ कि अगर अभी मेरा इस से सामना हो गया तो कहीं मेरी अस्र की नमाज़ न रह जाए। इसलिए मैं ने इस हाल में नमाज़ अदा कर ली कि मैं उस की तरफ़ चल रहा था और साथ ही अपने सिर से इशारा भी करता जाता था यानी इशारे से नमाज़ अदा की। जब मैं उस के पास पहुंचा तो उस ने पूछा तुम कौन हो? मैं ने कहा मैं बनू ख़ुजाह में से हूँ। मैं ने सुना था कि तुम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले के लिए लश्कर इकट्ठा कर रहे हो। इसलिए मैं भी तुम्हारे साथ शामिल होने के वास्ते आया हूँ। उसने कहा बेशक में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले के लिए लश्कर जमा कर रहा हूँ। इसलिए मैं कुछ देर तक उस के साथ चलता रहा। फिर मैं ने इस से बातें शुरू कीं तो उसने मेरी बातों में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी ली। सुफ़ियान बिन ख़ालिद ने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) को अभी तक दरअसल कोई मुझ जैसा नहीं मिला। अब तक ऐसे ही लोग मिले जो जंग के माहिर नहीं हैं। आख़िर जब वह अपने ख़ेमा में पहुंच गया और इस के साथी इधर उधर चले गए तो वे मुझ से कहने लगा हे ख़ज़ाई भाई ज़रा यहां आ जाओ। मैं इस के क़रीब आया तो वह बोला बैठ जाओ। मैं इस के पास ही बैठ गया यहां तक कि जब हर तरफ़ रात का सन्नाटा छा गया और लोग सो गए तो मैं ने अचानक उठकर उस को क़तल कर डाला और उस का सिर ले लिया। मैं वहां से निकल कर एक क़रीबी पहाड़ीके ग़ार में जा छिपा। कुछ लोग तलाश करते हुए इस ग़ार तक आए परंतु उन्हें कुछ नहीं मिला। इसलिए मायूस हो कर वे लोग वहां से वापस चले गए। इस के बाद मैं ग़ार से निकल कर रवाना हुआ। मैं रात को सफ़र करता और दिन में कहीं छिप जाता। आख़िर मदीना पहुंचा तो मुझे देखते ही रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया اَفْلَحَ الْوَجْهُ : अर्थात यह चेहरा सफ़ल रहा। अब देखें उन्होंने बड़ी विनम्रता से यह फ़रमाया और बड़ी दानाई से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अर्ज़ किया और फ़ौरन यह वाक्य फ़रमाया कि اَفْلَحَ وَجْهُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कि आप का चेहरा सफ़ल रहा। अर्थात ये सारी कामयाबी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही है, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं कीबरकत से ही है। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने सारी तफ़सील बताई और इस बाग़ी सरदार का सिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने रख दिया। एक रिवायत यह भी है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो के आने से पहले ही सुफ़ियान बिन ख़ालिद के क़तल की ख़बर दे दी थी। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि इस कामयाबी पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने ख़ुश हो कर एक असा मुझे दिया और फ़रमाया यह मेरे और तुम्हारे दरमयान जन्नत में निशानी होगी। तुम जन्नत में इस के साथ टेक लगाओगे। इसलिए उस के बाद यह असा हमेशा अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हो के पास रहा। यहां तक कि जब उनका आख़िरी वक़्त आया तो उन्होंने अपने घर वालों को इस के विषय में वसीयत करते हुए कहा कि यह असा मेरे कफ़न के अंदर इस तरह रख देना कि ये मेरे जिस्म और कफ़न के दरमयान रहे। इसलिए घर वालों ने इस वसीयत की तामील की। अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ूल् मिखस्रा अर्थात असा वाला भी कहा जाता है।

(सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 231-232 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(शरह अल्लामा जरक़ानी बहग 2 पृष्ठ 474 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से अठारह रोज़ बाहर रहे और हफ़्ता के रोज़ जबकि मुहर्रम के सात दिन बाक़ी थे वापस आए।

(अल् तबकातुल् कुबरा भाग 2 पृष्ठ 39 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुहर्रम चार हिज्री में इस मुहिम की तफ़सील वर्णन करते हुए लिखा है कि "क़ुरैश की इश्तिआल अंगेज़ी और उहद में मुस्लमानों की वक़्ती हज़ीमत अब निहायत सुरात के साथ अपने ख़तरनाक नतायज ज़ाहिर कर रही थी। इसलिए इन्ही अय्याम में जिनमें अनु असद ने मदीना पर छापा मारने की तैयारी की थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला मिली कि क़बीला बनू ल्हयान के लोग अपने सरदार सुफ़ियान बिन ख़ालिद की अंगेख़्त पर अपने वतन अरुणा में जो मक्का से क़रीब एक मुक़ाम था एक बहुत बड़ा लश्कर जमा कर रहे हैं और उनका इरादा मदीना पर हमला आवर होने का है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो निहायत मौक़ा-शनास और मुख़्तलिफ़ क़बायल अरब की हालत और उनके रसा की ताक़त और प्रभाव से ख़ूब वाक़िफ़ थे इस ख़बर के मौसूल होते ही समझ लिया कि यह सारी शरारत और फ़ित्ना-अंगेज़ी बनू लहयान के रईस सुफ़ियान बिन ख़ालिद की है और अगर उस का वजूद दरमयान में न रहे तो बनू लहयान मदीना पर हमला आवर होने की जुर्रत नहीं कर सकते और यह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जानते थे कि सुफ़ियान के बग़ैर इस क़बीला में फ़िलहाल कोई ऐसा साहिब असर शख़्स नहीं है जो इस किस्म की तहरीक का लीडर बन सके। लिहाज़ा यह ख़्याल करते हुए कि अगर बनू लहयान के ख़िलाफ़ कोई फ़ौजी दस्ता रवाना किया गया तो ग़रीब मुस्लमानों के वास्ते मौजिब-ए-तकलीफ़ होने के इलावा मुम्किन है कि यह तरीक़ मुल्क में ज़्यादा कुशत-ओ-ख़ून का दरवाज़ा खोल दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह तजवीज़ फ़रमाई कि कोई एक शख़्स चला जाए और अवसर पाकर इस फ़ित्ना के बानीमबानी और इस शरारत की जड़ सुफ़ियान बिन ख़ालिद को क़त्ल कर दे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ग़रज़ से अबदुल्लाह बिन अनसारी रज़ियल्लाहु अन्हु को रवाना फ़रमाया। और चूँकि अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी सुफ़ियान को देखा नहीं था इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद उनको सुफ़ियान का सारा हुल्या इत्यादि समझा दिया और

आख़िर में फ़रमाया कि होशयार रहना। सुफ़ियान एक मुजस्सम शैतान है। इसलिए अब्दुल्लाह बिन उनेसु रज़ियल्लाहु अन्हु होशयारी के साथ बनू लहयान के कैंप में पहुंचे (जो वाक़ई मदीना पर हमला करने की तैयारी में बड़ी सरगर्मी से थे) और रात के वक़्त अवसर पाकर सुफ़ियान का ख़ातमा कर दिया। बनू लहयान को इस का इल्म हुआ तो उन्होंने अब्दुल्लाह का पीछा किया परंतु वे छुपते छुपाते हुए बच कर निकल आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब अबदुल्लाह बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी शक्ल देखते ही पहचान लिया कि वह सफ़ल हो कर आए हैं। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखते फ़रमाया : اَفْلَحَ الْوَجْهُ ۔ यह चेहरा तो बा-मुराद नज़र आता है। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया और क्या ख़ूब अर्ज़ किया 'اَفْلَحَ وَجْهُكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ۔ हे रसूलुल्लाह ये सब कामयाबी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की है। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ का असा अब्दुल्लाह को बतौर इनाम के अता फ़रमाया और फ़रमाया यह असा तुम्हें जन्नत में टेक लगाने का काम देगा अब्दुल्लाह ने यह मुबारक असा निहायत मुहब्बत और इखलास के साथ अपने पास रखा और मरते हुए वसीयत की कि उसे उनके साथ दफ़न कर दिया जाए। इसलिए ऐसा ही किया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस ख़ुशी से जिसका इज़हार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह की बा-मुराद वापसी पर फ़रमाया और इस इनाम से जुआ नहीं ग़ैरमामूली तौर पर अता फ़रमाया पता लगता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़यान बिन ख़ालिद की फ़ित्ना-अंगेज़ी को निहायत ख़तरनाक ख़्याल फ़रमाते थे और इस के क़तल को अमन आम्मा के लिए एक मूजिब रहमत समझते थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 512-513)

इस्लाम के मुख़ालिफ़ दुश्मन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमन बर्बाद किया और इन्सानी जानों का ख़ून करवाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन्सानी जान की क़दर का तो यह हाल है कि दुश्मन क़बीले के लोगों की जान बचाने के लिए यह एक तरकीब निकाली कि एक जान को क़तल करना बेहतर है ताकि उनके बाक़ी लोग बच जाएं। यह इन्सानी हमदर्दी की मिराज है। आजकल की तथा कथित दुनिया चंद लोगों को क़तल करने के बहाने मासूम बच्चों और औरतों और बूढ़ों का ख़ून कर रही हैं और कहते हैं और बड़ी ढिटाई से कहते हैं कि ये तो जंग में होता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो बाक़ायदा जंगों में भी यह हुक्म फ़रमाते थे किसी बच्चे, बूढ़े, औरत और मज़हबी शख़्स को जो बराह-ए-रास्त जंग में मुलव्वस नहीं है क़तल नहीं करना।

(सुंन अबी दाऊद किताबुल् जिहाद बाब फ़ी दुआ अल् मुशरेक़ीन हदीस : 2614)

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग प्रथम पृष्ठ 768 हदीस 2728 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

अतः यह है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी और इस्लामी तालीम अब सरिया रजीह का वर्णन करूँगा क्योंकि उसकी तफ़सील लंबी है। इसलिए कुछ हिस्सा आज पेश करूँगा। इस सरिया को इसके अमीर मुर्सिद बिन अबी मुर्सिद की वजह से सरिया मुर्सिद बिन अबी मुर्सिद भी कहा जाता है लेकिन ज़्यादा प्रचलित रजिया का नाम ही है।

(अल् तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 42 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

रजीव बनू हुज़ैल का एक चशमा था जो हिजाज़ में वाक़्य है। इस का मौजूदा नाम वती्यह है जो मक्का मुकर्रमा से सत्तर किलो मीटर की मुसाफ़त पर शुमाल में स्थित है

(दायरा मआरिफ़ सीरतुन्नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 7 पृष्ठ 139-138 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

यह सरिया सिफ़र चार हिज्री के शुरू में रजीव की जानिब पेश आया।

(इन्साईकलोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 447 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़1434 हि)

इब्न-ए-असहाक इब्न-ए-हशामि के मुताबिक़ यह सरिया जंग-ए-उहद के बाद तीसरे वर्ष में हुआ। बुख़ारी की शरह फ़तह अल्बारी और मोहिब में लिखा है कि तीसरे वर्ष के आख़िर में यह हुआ।

(सीरत इब्ने इसहाक़ पृष्ठ 371 ज़िक्र यौमुल् रजीअ फ़ी सित्ता सलासा प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

(इब्ने हशाम पृष्ठ 591 ज़िक्र यौमुल् जीअ फ़ी सित्ता सलासा प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(फ़तह अल् बारी भाग 7 पृष्ठ 483 बाब ग़ज़व अल् रजीअ क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

(अल् मवाहेबुल दुनिया बहग 1 पृष्ठ 416 यौमुल् जीअ, प्रकाशन अल् मक्तबा इस्लामिया बेरूत 2004 ई.)

हमारे रिसर्च सेल ने सरिया रजीव के ज़िमन में एक नोट दिया है और जो इस हवाले से तवज्जा तलब है कि इस में बाअज़ तारीख़ों का फ़र्क़ पड़ता है। बहरहाल जो तहक़ीक़ करने वाले हैं हो सकता है उनके लिए लाभदायक हो इसलिए मैं यह भी पढ़ देता हूँ कि तारीख़-ओ-सीरत की कुतुब में यहां तक कि बुख़ारी में भी सरिया रजीअ और बिर्रे मऊना के वाक़ियात आपस में ख़लत-मलत हो गए हैं और कुछ सीरत निगारों ने इस की तरफ़ तवज्जा भी दिलाई है और इस में एक सहू यह भी है कि अक्सर सीरत निगार सरिया रजीअ की तारीख़ सिफ़र चार हिज्री लिखते हैं और इस की तफ़सील इस तरह वर्णन की जाती है कि हज़रत ख़ुबेब और हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को मक्का में बेच दिया गया लेकिन हुर्मत वाले महीने शुरू होने की वजह से मक्का वालों ने उन्हें क़ैद में रखा और जब हुर्मत वाले महीने ख़त्म हो गए तो इन दोनों को क़तल कर दिया। यह अक्सर सीरत निगार वर्णन करते हैं लेकिन जब ग़ौर किया जाए तो प्रश्न यह पैदा होता है कि हुर्मत वाले महीने चार हैं। तीन नियमित हैं अर्थात ज़िल् क़ादा, ज़िल् हज्जा और मुहर्रम जबकि चौथा महीना मुहर्रम के पाँच माह बाद रजब का है। अब जब सिफ़र में यह सरिया हुआ था तो हुर्मत वाले तीन महीने तो पहले गुज़र चुके थे अब सिफ़र के चार माह बाद हुर्मत वाला चौथा महीना आना था इसलिए अगर यह सरिया सिफ़र चार हिज्री का तस्लीम किया जाए तो फिर यह कहना कि हुर्मत वाले महीने शुरू हो चुके थे ये खिलाफ-ए-अक़ल है और फिर इसी तरह जब हुर्मत वाले महीने थे ही नहीं तो इन दोनों को देर तक क़ैद रखने का कोई जवाज़ नहीं बनता। मक्का वाले जो कि उनको जल्द से जल्द क़तल कर के अपनी इंतेक़ाम की आग ठंडी करना चाहते थे उन्हें क्या ज़रूरत थी कि ख़्वाह-मख़ाह उनको लंबा अरसा क़ैद रखते और खाने पीने और हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी का बोझ अपने सिर पर लेते। जो सीरत निगार और इतिहासकार यह सरिया सिफ़र चार हिज्री में वर्णन करते हैं उन्होंने इन सवालों को नहीं उठाया। हमारे सामने दो में से एक रास्ता है कि या तो यह कहा जाए कि हुर्मत वाले महीनों की बात और इन दोनों का एक अरसा तक क़ैद रहने वाली बात दरुस्त नहीं या हम ये कहें कि ये सारी रवायात तो दरुस्त हैं कि हुर्मत वाले महीने भी शुरू हो चुके थे और एक अरसा तक क़ैद भी रहे अल् बत्ता इस सूरत में यह तस्लीम करना पड़ेगा कि अक्सर मुअर्रिख़ीन और सीरत निगारों को इस सरिया की तारीख़ महफ़ूज़ करने में गलती हुई है और उन मुअर्रिख़ीन की जो बहुत थोड़े हैं बात काबिल-ए-तर्जीह है कि जो यह वर्णन करते हैं कि जब उनको मक्का में फ़रोख़त किया गया तो उस वक़्त हुर्मत वाले महीने अर्थात ज़ी क़ादा का आग़ाज़ हो चुका था। इसलिए सीरत इब्न-ए-इसहाक़ जो सीरत की सबसे अव्वलीन कुतुब में से एक है और इब्न-ए-हशशाम इन दोनों ने सरिया रजीव की तारीख़ वर्णन करते हुए लिखा है कि यह सरिया जंग-ए-उहद के बाद तीन हिज्री में हुआ और बुख़ारी के एक मशहूर और मुस्तनद शारह इब्ने हिज्र फ़तह अल्बारी में इस हवाले से वर्णन करते हैं कि यह वाक़िया तीन हिज्री के आख़िर में हुआ और इस के हवाल्ए से सीरत की एक और मुस्तनद किताब मे भी यह लिखा है। इसलिए ज़्यादा दरुस्त यही मालूम होता है कि यह सरिया तीन हिज्री शवाल के आख़िरी दिनों में हुआ और चूँकि सिफ़र चार हिज्री में हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया गया था और जब उनकी शहादत की ख़बर मदीना पहुंची तो रिवायात में यह तारीख़ आहिस्ता-आहिस्ता ज़्यादा ग़ालिब आ गई।

बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है। इस सरिया की पृष्ठभूमी यह है। इस के बारे में लिखा है कि पिछला सरिया यानी सरिया अबदुल्लाह बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु में वर्णन हुआ है कि बनू लहयान के सरदार सुफ़ियान बिन ख़ालिद को क़तल करवा दिया गया जिसकी वजह से यह क़बीला इंतेक़ाम की आग में भड़क रहा था और दिन रात इस सोच में ग़र्क़ रहने लगा कि क्या तरीक़ हो कि मुस्लमानों से इस का बदला ले सकें। इसलिए इस क़बीले के कुछ लोग क़बीला अज़ल और कुराह के पास आए। ये लोग तीर-अंदाज़ी में बहुत माहिर थे। अज़ल क़बीला बनू होन बिन ख़ुज़ैमा की एक शाख़ थी जो अज़ल बिन देश की तरफ़ मंसूब होता था। कारा क़बीला भी होन की एक शाख़ थी जो देश की तरफ़ मंसूब होता था। बनू लहयान ने उनको कहा कि तुम लोग मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मदीना जाओ और उनसे दरख़ास्त करो कि वे अपने कुछ लोग तुम्हारे साथ रवाना करें ताकि तुम्हारे क़बीला में इस्लाम की दावत-ओ-तब्लीग़ का काम कर सकें और पूरी उम्मीद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने कुछ साथी तुम लोगों के साथ रवाना कर दें। और जब मुहम्मद सल्ल-

ल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी तुम्हारे साथ आएं तो हम उनको क़ुरैश मक्का के हाथ फ़रोख़्त कर देंगे जिसके बदले में हमें भारी क़ीमत मिल जाएगी और मक्का वाले उनको क़तल कर डालेंगे जिससे हमारा बदला भी पूरा हो जाएगा और इस माल-ओ-दौलत में से तुम लोगों को भी हम एक हिस्सा देंगे। इसलिए इस बाक़ायदा मंसूबा बंदी के साथ अज़ल और कुरह क़बीला के सात अफ़राद एक वफ़द की सूरत में मदीना आए और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कहने लगे कि हमारे क़बीला में इस्लाम की बड़ी शौहरत है। लिहाज़ा आप अपने कुछ लोग हमारे साथ रवाना कर दें जो कि वहां दावत-ए-इसलाम का काम करें। इसी दौरान रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस अफ़राद पर मुश्तमिल एक पार्टी तैयार की थी जो मक्का के इर्द-गिर्द जासूसी करते हुए सारे हालात का जायज़ा ले सके। अब जब यह वफ़द आया तो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस अफ़राद की इसी जमात को उनके साथ रवाना कर दिया।

(उद्धृत इन्साईकलोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 448-449 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1434 हिज्री)

एक रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ सात आदमी भेजे थे।

(सिब्बलुल् हुदा वाल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 40 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इब्न-ए-हिशाम ने लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने छः सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को उन लोगों के साथ रवाना किया था। जबकि इब्न-ए-साद ने वर्णन किया है कि वे दस थे और उनमें से सात के नाम वर्णन किए हैं।

(सीरत इब्ने हशाम पृष्ठ 432 दारुल इब्ने हज़म बेरूत)

(सिब्बलुल् हुदा वाल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 39 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत, लुबनान)

सही बुख़ारी में दस अफ़राद का वर्णन है। सीरत की अक्सर कुतुब में भी दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है जबकि नाम सिर्फ सात सहाबा के मिलते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने असिम बिन साबित को और बाअज़ ने कहा कि मुर्सद बिन अबी मुर्सद गँवी को अमीर बनाया।

(सही बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी बाब फ़ज़ल मन शहद बदरान् हदीस : 3989)

(उद्धारित अल् तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 42 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हिज्रत के चौथे वर्ष अरब के दो क़बायल अज़ल और कुरा ने अपने नुमाइंदे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भेज कर अर्ज़ किया कि हमारे क़बायल में बहुत से आदमी इस्लाम की तरफ़ मायल हैं और दरख़ास्त की कि कुछ आदमी जो इस्लाम की तालीम से पूरी तरह से वाक़िफ़ हों, भेज दिए जाएं ताकि वे उनके दरमयान रह कर उनको इस नए मज़हब की तालीम दें। दरअसल यह एक साज़िश थी जो इस्लाम के पक्के दुश्मन बनु लहन् ने की थी और उनका उद्देहय यह था कि जब ये नुमाइंदे मुस्लमानों को लेकर आएँगे ये नुमाइंदे, ये जो वफ़द उन्होंने भेजा था ये मुस्लमानों को लेकर जब आएँगे "तो वे उनको क़तल कर के अपने रईस सुफ़ियान बिन ख़ालिद का बदला लेंगे। इसलिए उन्होंने अज़ल और कुरा के नुमाइंदों को इस ग़रज़ से कि वे चंद मुस्लमानों को अपने साथ ले आएं, इनाम के बड़े-बड़े वादे देकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा। जब अज़ल और कुअरा के लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच कर दरख़ास्त की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने उनकी बात पर एतबार करके दस मुस्लमानों को उनके साथ कर दिया कि उनको इस्लाम के अक़ायद और उसूलों की तालीम दें।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 260)

इसलिए ये लोग गए और फिर आगे जो वाक़ियात हैं इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा।

आज मैं फिर यमन के असीरान के लिए विशेषता पर दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। विशेषतः उन महिलाओं के लिए जो वहां की सदर लजना भी हैं, उनको बड़ी मुश्किल में रखा हुआ है, क़ैद में रखा हुआ है और चंद एक और भी जो उन की बात मानने को तैयार नहीं उनको भी असीर बनाया हुआ है, उनके लिए विशेष दुआ करें अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए। पाकिस्तान के असीरान के लिए भी रिहाई के लिए दुआ करें। फ़लस्तीन के लोग, उनके लिए भी दुआ करते रहें। वहां भी लगता है कि हालात बेहतर हो रहे हैं लेकिन फिर ख़राब हो जाते हैं। ये जो इसराईली हुकूमत है, ढिटाई से काम ले रहे हैं। अल्लाह तआला उनको उनके ज़ुलम से जल्दी नजात दिलवाए और मुस्लमानों को भी अपना हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(रोज़नामा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 31 मई 2024 ई. पृष्ठ 2 से 6

पृष्ठ 1 का शेष भाग

कि अगर उसे कोई और ठिकाना नहीं मिले तो वह इस में चंद रोज़ क़याम करके रिहायश की दिक्कतों से बच सकता है। और मुक़ीम इस रंग में फ़ायदा उठा सकता है कि मस्जिद शूरू शग़ाब से महफ़ूज़ मक़ाम है। वह इस में बैठ कर इतमीनान और सुकून से दुआएं कर सकता और अपने रब से मुनाजात कर सकता है। और वे लोग जो अपने आपको ख़ुदा तआला के दीन के लिए वक़्फ़ कर देते हैं उनका असल ठिकाना तो मस्जिद ही होता है क्योंकि मस्जिद मोमिनों के इजतेमा का मुक़ाम होती है और दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही की जगह होती है। ऐसे मुक़ाम से कोई सच्चा इशक़ और ताल्लुक़ रखने वाला इन्सान जुदा ही नहीं हो सकता। परंतु यह अमर भी मद्द-ए-नज़र रखना चाहिए कि खुदा की याद का क़ायम मक़ाम वह समस्त काम भी हैं जो क़ौमी फ़ायदा के हों। चाहे वह क़ज़ा के मुताल्लिक़ हो या झगड़ों और फ़सादाद के मुताल्लिक़ हो या तालीम के मुताल्लिक़ हों या किसी और रंग में मुस्लमानों की तरक़्क़ी और उन के तनज़्ज़ुल के साथ ताल्लुक़ रखते हों। इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना को अगर देखा जाए तो लड़ाईयों के फ़ैसले भी मस्जिद में होते थे। क़ज़ा भी वहीं होती थी। तालीम भी वहीं होती थी। जिससे मालूम होता है कि मसाजिद केवल अल्लाह अल्लाह करने के लिए ही नहीं बल्कि कुछ दूसरे काम भी जो क़ौमी ज़रूरतों से ताल्लुक़ रखते हैं मसाजिद में किए जा सकते हैं। इसलिए कि इस्लाम में खुदा की उपासना केवल इस बात का नाम नहीं कि इन्सान सुब्हान-अल्लाह सुबहान अल्लाह कहता रहे बल्कि अगर कोई विधवा की ख़िदमत करता है तो वह भी दीन है। अगर कोई यतीम की परवरिश करता है तो वह भी दीन है। अगर कोई शख़्स लोगों के झगड़े दूर करता और उन में सुलह कराता है तो यह भी दीन है। अतः वह समस्त काम जिनसे क़ौम को फ़ायदा पहुंचे और जो क़ौम के अख़लाक़ और उसकी दुनयवी हालत को ऊंचा करें ख़ुदा की याद में शामिल हैं और उनका मसाजिद में करना जायज़ है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में अगर कोई मेहमान आ जाता तो आप मस्जिद में ही सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को संबोधित करके फ़रमाते कि अमुक मेहमान आया है तुम में से कौन उसे साथ ले जाएगा। अब बज़ाहिर ये रोटी का सवाल था लेकिन वास्तव में दीन था इसलिए कि इस से एक दीनी ज़रूरत पूरी होती थी। लोगों ने ग़लती से दीन के अर्थों को बहुत सीमित कर दिया है हालाँकि दीन इसलिए नाज़िल हुआ है कि इन्सान का ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ पैदा करे और ख़ुदा तआला बग़ैर किसी ख़िदमत के बंदा से नहीं मिलता बल्कि वह यतीम की परवरिश करने से मिलता है। वह बेवा की ख़िदमत करने से मिलता है। वह काफ़िर को तब्लीग़ करने से मिलता है। वह मोमिन को मुसीबत से नजात दिलाने से मिलता है। अतः इन बातों का अगर मस्जिद में वर्णन किया जाता है तो यह दुनिया नहीं बल्कि दीन का ही हिस्सा होगा। हाँ मसाजिद में ख़ालिस ज़ाती कामों के मुताल्लिक़ बातें करना मना है। उदाहरणतः अगर तुम किसी से पूछते हो कि तुम्हारी बेटी की शादी का क्या फ़ैसला हुआ या कहते हो कि मेरी तरक़्क़ी का झगड़ा है अफ़्सर नहीं मानते तो ये बातें मस्जिद में जायज़ नहीं होंगी। सिवाए इमाम के कि इस पर समस्त क़ौम की ज़िम्मेदारी होती है और उस का हक़ है कि वह ज़रूरत महसूस होने पर इन उमूर के मुताल्लिक़ भी लोगों से बातें कर ले। बहर-ए-हाल मस्जिद में ख़ालिस ज़ाती कामों के मुताल्लिक़ बातें करना मना है। उदाहरणतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अगर किसी की कोई चीज़ गुम हो जाएगी तो वह उसके मुताल्लिक़ मस्जिद में ऐलान न करे। अतः मसाजिद केवल खुदा की याद के लिए नहीं लेकिन खुदा की याद इन समस्त बातों पर मुश्तमिल है जो इन्सान को राष्ट्रीय, सयासी, इलमी और क़ौमी बरतरी और तरक़्क़ी के लिए हों। लेकिन वे समस्त बातें जो लड़ाई दंगा फ़साद या क़ानूनशिकनी से ताल्लुक़ रखती हों चाहे उनका नाम राष्ट्रीय रख लो या सयासी, क़ौमी रख लो या दीनी उनका मसाजिद में करना नाजायज़ है। इसी तरह मसाजिद में ज़ाती उमूर के मुताल्लिक़ बातें करना भी मना है क्योंकि इस्लाम मस्जिद को बैतुल्लाह क़रार देता और उसे अल्लाह तआला की उपासना के लिए विशेष क़रार देता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 27 से 29)

★ ★ ★

कूड़ा उठाने पर जिन्होंने आरोप किया लगाया है ग़लत है, मैंने ख़ुद भी कई दफ़ा वक़ार-ए-अमल के तहत कूड़ा क्रकट उठाया है और गंदी नालियां साफ़ की हैं, सफ़ाई करने और कूड़ा क्रकट उठाने से कदापि इज़्ज़त नहीं जाती, इज़्ज़त अल्लाह तआला के आदेशों की अवज्ञा करने से जाती है।

यदि पहले बता दें कि नक़द की सूरत में इस चीज़ की इतनी क़ीमत होगी और

यदि वह इसी चीज़ की क़ीमत क़िस्तों में अदा करेंगे तो उन्हें इतने पैसे ज़्यादा देने पड़ेंगे तो इस में कोई हर्ज नहीं और यह सूद के ज़ुमरे में नहीं आता

यदि किसी मोमिना महिला के बुरे पति की समझाने के बावजूद इस्लाह ना हो रही हो और

महिला को उस से अलैहदगी लेने में कोई मजबूरी दरपेश न होतो इस मोमिना महिला को दुआ करके ऐसे बुरे पति से अलैहदगी ले लेनी चाहिए

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर
(क़िस्त 23-भाग 2)

प्रश्न : एक नौजवान ने अहमदियत के बारे में तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लिबास और आप के ज़ेर-ए-इस्तेमाल कुछ वस्तुओं के बारे में मुतफ़र्रिक़ इस्तिफ़सारात हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किए। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने प त्र तिथि 23 मार्च 2020 ई. में इन प्रश्नों के निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया ।

उत्तर : हदीस में विभिन्न सहाबा से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इमामा का प्रयोग फ़रमाया करते थे। इसलिए हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़तह मक्का के दिन मक्का में दाख़िल हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर मुबारक पर कला इमामा था।

इसी तरह हज़रत अम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों से खिताब फ़रमाया और आपके सिर मुबारक पर स्याह इमामा था। (सही मुस्लिम किताबुल् हज्ज बाब अज़ दुख़ूले-मक्का बिग़ायार ..)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस सुन्नत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं "..आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तेबंद भी बाँधा करते थे और सरावील भी ख़रीदना आपका साबित है जिसे हम पाजामा या तेबंद कहते हैं .. इसके अतिरिक्त टोपी। कुरता। चादर और पगड़ी भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आदत-ए-मुबारक थी।"

(अल् हकम नंबर 14 भाग 7 तिथि 17 अप्रैल 1903 ई. पृष्ठ 8)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तविक आशिक़, आपके कामिल मतबा और सच्चे ग़ुलाम थे। आप हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार पगड़ी का प्रयोग फ़रमाया करते थे।

बाक़ी जहां तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पगड़ी पहनने के बजाए बालों की knot बनाने की बात है तो इस बारे में याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आला दर्जा की आज्ञा का पालन और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हद दर्जा की मुहब्बत के नतीजे में ज़िल्ली और उम्मती नबी के स्थान पर फ़ायज़ फ़रमाया। अम्बिया ख़ुदा तआला के शायर में से हैं जिनका अदब और एहतेराम हम पर वाजिब है। अतः अम्बिया की ज़ात के बारे में इस किस्म के प्रश्न उनकी शान के ख़िलाफ़ मुतसव्वर होते हैं।

ख़ुद ब ख़ुद चलने वाले पेन वाली बात ग़लत है। न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास ऐसा कोई पेन था और न मेरे पास है। हाँ अल्लाह तआला का अपने प्यारों के साथ ऐसा सम्बन्ध होता है कि वे प्रत्येक मुआमले में ख़ुद उनकी राहनुमाई करता है। और अल्लाह तआला का यही सम्बन्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके ख़लिफ़ा कराम के साथ है।

जहां तक अंतिम कम्यूनिटी का सम्बन्ध है तो यह कोई नया मज़हब नहीं है। बल्कि इस्लाम की वास्तविक जमाअत है। जिसे अल्लाह तआला ने इस्लाम के संस्थापक हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के ऐन अनुसार क़ायम फ़रमाया है।

जिस तरह अल्लाह तआला दुनिया की इस्लाह और बेहतरी के लिए पहले वक़्तों में विभिन्न इलाक़ों और विभिन्न ज़मानों में अम्बिया अवतरित करता रहा है और लोगों की राहनुमाई के लिए उन्हें तालीमात से नवाज़ता रहा है। इसी तरह उसने हमारे आक़ा-ओ-मुता मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारी दुनिया की हिदायत के लिए मबऊस फ़रमाया और क़ियामत तक क़ायम रहने वाली दाइमी शिक्षा क़ुरआन-ए-करीम का आप पर नाज़िल फ़रमाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से ख़बर पा कर भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक वक़्त आएगा जब उम्मत-ए-मुस्लिमा में बिगाड़ पैदा हो जाएगा और मुसलमान इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से दूर हो जाऐंगे। ऐसे वक़्त में अल्लाह तआला इस उम्मत पर रहम फ़रमाते हुए उसकी राहनुमाई के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ही मुतबईन में से आपके एक ग़ुलाम सादिक़ को खड़ा करेगा जो लोगों को इस शिक्षा पर क़ायम करेगा जो अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाई थी और जिसकी व्याख्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने अक़्वाल-ओ-अफ़आल से फ़रमाई थी।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी सारी ज़िंदगी इस ज़िम्मेदारी को निभाने में खर्च फ़रमाई। आपके देहांत के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही भविष्यवाणी के अनुसार जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का बाबरकत सिलसिला जारी हुआ और जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ख़िलाफ़त के बाबरकत साय में इस्लाम का पुरअमन संदेश और इसकी सुन्दर शिक्षा सारी दुनिया में पहुंचाने पर कमरबस्ता है।

अतः अंतिम कम्यूनिटी किसी इन्सान का बनाया हुआ इदारा नहीं जिसके सादा होने या न होने पर बात की जाए बल्कि यह अल्लाह तआला का लगाया हुआ एक पौधा है जो उसी की दी हुई तालीमात इन्सानों की भलाई के लिए दुनिया में फैलाने में कोशां है।

बुराई और अच्छाई के बारे में आप के प्रश्नों का उत्तर यह है कि बुराई और अच्छाई का मयार क्या है? हो सकता है कि एक बात आपके नज़दीक बुरी हो लेकिन किसी दूसरे के नज़दीक अच्छी हो। और दुनिया में इसकी कई उदाहरणे मिल सकती हैं। लेकिन मज़हब की दुनिया में जिन बातों के करने का ख़ुदा तआला ने आदेश दिया वह अच्छाई है और जिन बातों से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया वह बुराई है, जिसे इस्लामी इस्तिलाह में अवामिर-ओ-नवाही कहा जाता है। और एक मुसलमान से

तवक़्क़ो की जाती है कि वह इन अवामिर-ओ-नवाही पर कारबंद हो। अर्थात् जिन बातों के करने का अल्लाह तआला और उसके रसूलु सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया उनको बजा लाए और जिन बातों से अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह ने मना फ़रमाया इन को तर्क कर दे। इसके इसी किस्म के आमाल के अनुसार इस से मुआमला किया जाएगा।

जहां तक दूसरे धर्मों के लोगों का सम्बन्ध है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनमें से जिसने भी कोई नेक अमल किया है अल्लाह तआला इसे कदापि ज़ाए नहीं करेगा। इसलिए एक फ़ाहिश महिला के प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर अल्लाह तआला ने इस महिला को माफ़ कर दिया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया। यह इसलिए है कि अल्लाह तआला रहम पर मबनी सिफ़ात का भी मालिक है और जब चाहे वह उन्हें प्रयोग करने पर क़ादिर है।

बाक़ी आपके कूड़ा उठाने पर जिन्हों ने आरोप किया है, उनकी बात ग़लत है। जमाअत अहमदिया में तो ऐसे काम के लिए वक़ार-ए- अमल के शब्दों प्रयोग किए जाते हैं। अर्थात् ऐसा काम जिसके करने से इन्सान का वक़ार और इज़्ज़त बढ़ती है। अपने इलाक़े और माहौल को साफ़ रखना तो एक बहुत अच्छी आदत है जिसका अल्लाह तआला और उसके रसूलु सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी आदेश दिया है। मैं ने ख़ुद भी कई दफ़ा वक़ार-ए-अमल के तहत कूड़ा क्रकट उठाया है और गंदी नालिया साफ़ की हैं।

सफ़ाई करने और कूड़ा क्रकेट उठाने से कदापि इज़्ज़त नहीं की जाती। इज़्ज़त तो अल्लाह तआला के हाथ में है और उसके आदेशों की अवज्ञा करने से इज़्ज़त जाती है। इस लिए हमें हमेशा अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल पैरा होने की कोशिश करते रहना चाहिए।

प्रश्न : एक महिलाओं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि आम ज़रूरत की वस्तुओं की फ़रोख़्त के कारोबार में अशीया की क़ीमत क़िस्तों में अदा करने वालों से आम क़ीमत से कुछ ज़्यादा लेना सूद तो नहीं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 30 मार्च 2020 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया।

उत्तर आप अपने कारोबार में चीज़ ख़रीदने वालों को यदि पहले बता दें कि नक़द की सूरः में इस चीज़ की इतनी क़ीमत होगी और यदि वे इसी चीज़ की क़ीमत क़िस्तों में अदा करेंगे तो उन्हें इतने पैसे ज़्यादा देने पड़ेंगे तो इस में कोई हर्ज नहीं और यह सूद के ज़ुमरे में नहीं आता क्योंकि इस सूरत में आपको क़िस्तों में चीज़ें ख़रीदने वालों का बाक़ायदा हिसाब रखना पड़ेगा और हो सकता है कि उन्हें उनकी क़िस्तों की अदायगी के लिए याद दिहानियां भी करवानी पड़ें, जिस पर बहरहाल आपका वक़्त खर्च होगा और दुनियावी कामों में वक़्त की भी एक क़ीमत होती है। इसलिए मुलाज़मत पेशा लोग अपने वक़्त ही की बड़ी बड़ी तनख़्वाहें लेते हैं।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में किसी अख़बार में प्रकाशित होने वाला एक महिला की घटना कि उसने अपने पति को उसके शराब के नशे में धुत होने की वजह से हमबिस्तरी से इंकार कर दिया, वर्णन करके दरयाफ़त किया है कि यदि पति पत्नी में से एक फ़रीक़ नशे में हो तो क्या बाहम मुहब्बत की भावनाएं क़ायम रह सकती हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 30 मार्च 2020 में इस मसला के बारे में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

ऐसी सूरत में प्रश्न मुहब्बत की भावनाएं क़ायम रहने या न रहने का नहीं बल्कि सलीम फ़ित्रत की बात है। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में फ़िरऔन की पत्नी की इस दुआ को हमारे लिए सुरक्षित करके हमारी राहनुमाई फ़रमाई है कि رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ अर्थात् हे ख़ुदा तू अपने पास एक घर जन्नत में मेरे लिए भी बना दे और मुझे फ़िरऔन और उस की बदआमालियों से बचा ले।

इस आयत से वाज़ह होता है कि फ़िरऔन की पत्नी फ़िरऔन से अलैहदगी लेने में बहरहाल मजबूर थी जो उसने ख़ुदा के हुज़ूर यह इल्तिजा की।

अतः इस क़ुरआन की शिक्षा से साबित होता है कि यदि किसी मोमिना महिला के बुरे पति की समझाने के बावजूद इस्लाह न हो रही हो और महिलाओं को इससे अलैहदगी लेने में कोई मजबूरी दरपेश न होतो इस मोमिना महिला को दुआ करके ऐसे बुरे पति से अलैहदगी ले लेनी चाहिए।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 19 नवंबर 2021)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

8 अक्तूबर 2022 ई. शनिवार का दिन

मेहमानो के ईमान बढ़ाने वाले विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़िताब ने इस तक़रीब में शामिल मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। कुछ मेहमानों केविचार प्रस्तुत हैं :

एक मेहमान Jeff Williams साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं मैं अमन और इन्सानियत का पैग़ाम से बहुत ख़ुश हुआ हूँ। ख़लीफ़ा चाहते हैं कि हम सब मुत्तहिद हो कर मुआशरे की बेहतरी के लिए काम करें और यही वजह है कि यहां मस्जिद बन रही है। जबकि मुझे इस बात का अफ़सोस है कि हुज़ूर को इस बात का भी वर्णन करना पड़ा कि मस्जिद किसी के लिए ख़तरा का बायस नहीं है। मुझे ख़ुशी है कि आपने इस पर बात की। मुझे इस प्रोग्राम का हिस्सा बनने पर गर्व है। यह निश्चित तौर पर एक ख़ूबसूरत मस्जिद है। यहां प्रत्येक इबादत के लिए आ सकता है। यह भी बहुत प्रभावित करने वाली बात है कि किस तरह अमरीका की विभिन्न रियास्तों और दीगर देशों से लोग हज़ारों मील का सफ़र करके हुज़ूर की बातें सुनने के लिए और इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए इकट्ठे हैं।

एक मेहमान सुलतान साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हैं हुज़ूर अनवर ने जो समस्त दुनिया के लिए अमन का पैग़ाम दिया है, यह मेरे ख़्याल में एक बेहतरीन पैग़ाम है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है कि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस भय को दूर किया जाए कि वह यहां क़बज़ा कर लेंगे। हुज़ूर ने स्पष्ट बताया है कि चूँकि मुस्लमानों को ख़त्म करने की कोई प्रयास नहीं कर रहा है, इसलिए मुस्लमानों के लिए जंगी मुहिम का कोई जवाज़ नहीं है।

एक मेहमान Crystal Ragland कहते हैं बहुत ख़ुशी है कि मुझे इस तक़रीब में मदऊ किया गया है। मैं इस पैग़ाम को सराहता हूँ कि हुज़ूर ने समस्त मज़ाहिब के साथ अमन और मिल-जुल कर रहने की तलक़ीन की है। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि हुज़ूर यहां आए हैं।

एक मुक़ामी मेहमान अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं, यह मेरी ज़िंदगी का पहला अवसर था कि मैं किसी ऐसे प्रोग्राम में शरीक हूँ और यह तजुर्बा बहुत ही प्रभावित करने वाला रहा। हम सब का यही ईमान है कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। मुझे बहुत ख़ुशी है कि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए हैं। हमारा अलग अलग मज़हब है, लेकिन हम सब बुनियादी तौर पर एक ही बात कह रहे हैं। मेरे ख़्याल में अगर हम अपने ख़्यालात और अपने अक़ीदे को प्रत्येक से, अपनी कम्यूनिटी में और पड़ोसियों से बाँटना शुरू कर दें तो इस का अच्छा असर होगा। हम पहले ही फेसबुक पर इस पर बात करते हैं और यह प्रोग्राम भी ऐसा ही एक अवसर था। यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि प्रत्येक आपकी जमाअत के लिए नेक ख़ाहिशात का इज़हार करता है। मुझे वाक़ई बहुत लुतफ़ आया है। मुझे बुलाने का शुक्रिया।

एक मेहमान Lucas Anderson कहते हैं : बहुत ख़ुशी हुई कि मुझे इस तक़रीब पर आमंत्रित किया गया है। मैं आज तक इस मुस्लिम कम्यूनिटी के बारे में अज्ञान था। मैं इस पैग़ाम से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मुझे विश्वास है कि आपका मौक़िफ़ काबिल-ए-अमल और बहुत सुंदर है।

एक मेहमान Tom Berry अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहते हैं : मैं आपका और ख़लीफ़तुल मसीह का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आपका पैग़ाम, मेहमान-नवाज़ी, बाहमी मेल-जोल सब कुछ बहुत ख़ूब था। यह निसन्देह एक नेअमत है कि अक़ीदे या मज़हब से क़त-ए-नज़र एक दूसरे की भलाई के लिए अधिक से अधिक काम हो, ज़िंदगी की क़दर हो, ज़िंदगी से प्यार हो, इन्सानों का एहतेराम हो, इन्सानों से मुहब्बत हो। यह ज़ाहिर करता है कि ऐसे समाज में किसी एक फ़र्द या इदारे की इजारादारी नहीं है। सबको मिलकर काम करना है। यही ख़लीफ़ा का पैग़ाम था। यह पैग़ाम ऐसा है कि रोज़ाना सोने से क़बल और सुबह उठने के बाद दोहराना चाहिए और इसी पैग़ाम को फैलाना चाहिए। यही पैग़ाम हमें अपने बच्चों को समझाना चाहिए क्योंकि जब हम नहीं होंगे तो वह इस पैग़ाम को जारी रखें। मैं आपका फिर से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे इस प्रोग्राम में बुलाया है।

एक मेहमान Hector Amaya भी प्रोग्राम में शरीक थे। यह Sandeep Srivastava Campaign के फ़ील्ड डायरेक्टर हैं। यह अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं : यह बहुत ही शानदार प्रोग्राम था। मैं हुज़ूर से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपका पैग़ाम भी बहुत प्रभावित कण है विशेषता जब आपने आलमी अमन के बारे में बात की। निश्चित रूप में ख़लीफ़ा ने वे काम किया है जो इस मुल्क के सियासतदानों ने भी किया है।

नॉर्थ Presbyterian Church से एक मेहमान Beverly McCord कहती हैं कि : मैं पिछले आठ नौ सालों से विभिन्न तक़रीबात में शिरकत कर रही हूँ। हमारा चर्च अहमदी महिलाओं के साथ प्रोग्राम रखता था। ये बाज़-औक़ात चर्च में इकट्ठे होतीं और बाज़-औक़ात किसी अहमदी के घर में। हम कोई ऐसा विषय चुनते थे जिससे हम अपने अपने ख़्यालात की नुमाइंदगी कर सकें। इकट्ठे मिल बैठ कर बातें करते और खाना खाते। ये बहुत अच्छे प्रोग्राम थे। इसी तरह एक-बार फिर, हम एक दूसरे की इबादत-गाह में जाऐंगे और मौज़ू ए बेहस निर्धारित कर के अपने अपने मुक़द्दस सहीफ़ा की रूह से इस पर बात करेंगे। इस प्रोग्राम में शिरकत मेरे लिए ख़ुशी का बायस है। मैं हैरान हूँ कि किस तरह इस बड़े प्रोग्राम को आर्गेनाईज़ करने के लिए एक बड़ी टीम ने काम किया है, यह आपस में कितनी हम-आहंगी से काम कर रहे हैं, प्रत्येक का अपना काम है, शैडयूल है। ये बहुत दिलचस्प है। मैंने यह भी सुना है कि कुछ महिलाएं कारकुनान इस प्रोग्राम के लिए पिछले छः रातों से ठीक तरह से सौ भी नहीं पाइं और प्रत्येक ख़ुश है। कुछ ग़मगीं भी हो रही हैं कि इतना बड़ा प्रोग्राम, इतनी मेहनत और अब यह जल्दी से ख़त्म हो रहा है। मैं इन महलाओं की टीम से बहुत प्रभावित हूँ।

ख़लीफ़ा को देखकर उनकी बातें सुनकर बहुत सुकून मिला। किसी को आलमी अमन के लिए इस तरह प्रयास करते हुए नहीं देखा, यह बहुत अच्छा एहसास है। अगर लोग अपनी ख़ुदग़रज़ी, किसी पड़ोसी पर ग़लबा पाने या किसी दूसरे के इलाक़े पर क़बज़ा करने, या किसी पर ज़ुलम करने के एजंडे की बजाय इस पैग़ाम को सुनें तो दुनिया में अमन हो सकता है। काश हम अमन को फ़रोग़ देने वाली मज़ीद तक़ारीर सुन सकें और लोगों को याद दिलाते रहें कि उन्हें हमेशा अमन की पैरवी करनी चाहिए और काम करना चाहिए।

इस प्रोग्राम में Collin काओनटी पुलिस डिपार्टमैंट से LeRoy Thompson भी शरीक थे। ये कहते हैं चौधरी यह एक ख़ूबसूरत प्रोग्राम था और मैंने बहुत कुछ सीखा। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी ने हक़ीक़तन एक शानदार काम किया है। कम्यूनिटी से बाहर दीगर लोगों के लिए ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत ही अच्छा था। प्रोग्राम इंतेहाई मुनज़्ज़म और अच्छी तरह से पेश किया गया था। मेरी ख़ाहिश है कि मैं आप जैसी कम्यूनिटी से राबिता में रहूं और मज़ीद सीखूँ।

इस प्रोग्राम में Adeline Mora नामी एक लड़की भी शरीक थी। यह कहती है कि यह प्रोग्राम बहुत ही शानदार था। हुज़ूर की बातें सुनकर में बहुत ख़ुशी महसूस कर रही हूँ। जर्मनी जमाअत के सरबराह मेरे पास बैठे हुए थे और रात के खाने पर उनसे बात हुई

एक मेहमान डाक्टर हलीमुर्रहमान साहिब कहते हैं कि यह बिल्कुल नाक़ाबिल-ए-यक़ीन था। मुझे तक़रीब, इंतेज़ामात, मेहमान-नवाज़ी, पंडाल, माहौल बहुत अच्छा लगा। मुझे इस तक़रीब में मदऊ करने का शुक्रिया। मैं इस एहतेराम का मुस्तहिक़ नहीं था जो आपके लोगों ने मुझे दिया है। यह सब माहौल देखकर, आपकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई से मेरी आँखें नम हो गईं। मैं इस याद को महफ़ूज़ रखूँगा। मेरी तरफ़ से प्रत्येक फ़र्द का दिल से शुक्रिया अदा करें। मुझे बेहतरीन इन्सानों के मध्य वक़्त

गुज़ारने का अवसर मिला, हक़ीक़ी इन्सान जो कि इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात पर अमल पैरा हैं। आप सब का शुक्रिया।

एक मेहमान Mary McDermott भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। उन्होंने प्रोग्राम के लिए पार्किंग की जगह फ़राहम की थी। यह अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि ऐसी हैरत-अंगेज़ शाम के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया। मैं पहले कभी भी ज़मीन के इस गर्द-आलूद क़ता से इतना ख़ुश नहीं हुई जितना इस प्रोग्राम के लिए देने पर हुई हूँ। यहां आकर मैं बहुत एज़ाज़ महसूस कर रही हूँ। आप सब का शुक्रिया।

Laura नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। यह कहती हैं कि इस प्रोग्राम में हमें शामिल करने का बहुत शुक्रिया। यह बहुत ही शानदार और प्यारा प्रोग्राम था और खाना बहुत ही लज़ीज़ था।

एक मेहमान Joshua Murray कहते हैं : हमें वैसा ही करना चाहिए जो कि अख़लाक़ी तौर पर अच्छा लगे। और दुनिया की मौजूदा सूरत-ए-हाल देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा है कि यह पैग़ाम वक़्त की ज़रूरत मालूम होता है। तथा बाहमी इत्तिहाद के इस पैग़ाम को न केवल इस काओनटी बल्कि सारी दुनिया को सुनने की ज़रूरत है।

Cindy Walker नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शामिल थीं। ये कहती हैं कि मैं तीन वर्ष से एक मुबल्लिग़ सिलसिला की हम-साएगी में रहती हूँ। आज की यह तक़रीब मेरे लिए बहुत प्रभावित करने वाली थी। मेरे लिए हैरत की बात थी कि हुज़ूर ने इस मौज़ू पर बात की जो मैंने कभी सोची भी न था कि एक मस्जिद के माहौल में इस बात का क्या असर होगा लेकिन मुझे अंदाज़ा हो रहा है कि हम इस कम्यूनिटी के साथ रह रहे हैं जहां इस बारे में काफ़ी ग़ौर किया जाता है। मुझे यह देखकर हैरत हुई कि (हुज़ूर अनवर) इस बात को निश्चित बनाना चाहते थे कि वे इन संदेहों का अंत करें और मैं पूरी तरह ये बातें समझ चुकी हूँ। जितना अरसा मैं यहां रही हूँ मुझे इस जमाअत से मुहब्बत, इज़्ज़त और शफ़क़त के इलावा कुछ नहीं मिला।

एक मेहमान Melissa McNeely अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हमारे लिए गर्व की बात है कि आपने हमें आमंत्रित किया और इस के लिए हम आपके शुक्रगुज़ार हैं। हम एक ग्रुप लेकर आए थे कि जमाअत अहमदिया की नई मस्जिद के उद्घाटन की तक़रीब में शामिल हुए। मुझे अमन और बाहमी इत्तिहाद और दूसरी कमियोनीटीज़ से मेल-जोल पर आधारित पैग़ामात बहुत अच्छे लगे। हम सब इस कम्यूनिटी में मस्जिद और आप सब का और जो आप पैग़ाम लाए हैं का इस्तिक़बाल करते हैं। मैं हुज़ूर की इस बात को दाद देती हूँ कि हमें लोगों के भय को दूर करने चाहिए जो कि इस मस्जिद की तामीर से किसी के भी दिल में पैदा हुआ हो। मैं फिर इस बात का इज़हार करती हूँ कि आपके बुनियादी अक़ायद और पर अमन पैग़ाम और दुनिया की तकलीफ़ें दूर करने का पैग़ाम बहुत ही ख़ूब है।

एक मेहमान Abby Kirkendall कहती हैं कि मेरे लिए यह एक अवसर था कि मैं कोई ऐसी मज़हबी जमाअत देखूं कि जिनकी इबादत का तरीक़ा तो हमसे विभिन्न है लेकिन हमारी इक़दार एक जैसी ही हैं। मेरे लिए यह एक शानदार तजुर्बा था। यह मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र था कि मैं इतने आली मर्तबत मज़हबी राहनुमा को ऐसी ही इक़दार के बारे में बात करते हुए देख रही थी जो कि सब कमियो नीटीज़ को अपने अंदर समो लेनी चाहिऐं। यहां आने से पहले मैं हुज़ूर और आपकी जमाअत के बारे में अधिक नहीं जानती थी। यहां मुझे ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। और अक़ायद से क़त-ए-नज़र, जहां आपको ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो वहां आपको अमन और सुकून मिलता है, जो आज यहां समस्त लोगों को बिला इमतेयाज़ मज़हब-ओ-क़ौम-ओ-मिल्लत मिला और यही चीज़ है जिसकी ज़रूरत समस्त कमियो नीटीज़ को है।

एक मेहमान ख़ातून Nicole Collier वर्णन करती हैं कि मेरे लिए इस तक़रीब में शमूलियत एक शानदार तजुर्बा था कि किस तरह समस्त कम्यूनिटी यहां एक मस्जिद में ख़ुश-आमदीद कहती है और बाहमी तफ़रीक़ को ख़त्म करती है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात मेरे लिए बड़े एज़ाज़ की बात है। वैसे तो मैं अपने काम के लिहाज़ से बहुत से मोअज़्ज़िज़ीन से मिलती रहती हूँ लेकिन हुज़ूर से मुलाक़ात मेरे लिए सबसे बढ़कर थी। मैंने हुज़ूर को केवल अमन-ओ-आश्ती के बारह में बात करते सुना है। और उन्होंने लोकल कम्यूनिटी को विश्वास दिलवाया है कि यहां मुस्लमानों की मौजूदगी से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए क्योंकि मुस्लमान कम्यूनिटी अमन की रवादार है और यही है जो हम सबकी मुशतर्का इक़दार हैं। इसलिए लोकल कम्यूनिटी को बिल्कुल ख़ौफ़-ज़दा नहीं होना चाहिए। जब यहां हम पुलिस चीफ़, मेयर, कौंसल के मैंबरान, कांग्रेस के मैंबरान जैसे बड़े अमायदीन को देखते हैं तो इस से पता चलता है कि यहां इस मस्जिद का होना बड़ी अहमियत का हामिल है। मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ और इस एहसास को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती जो मुझे हुज़ूर की मौजूदगी से यहां महसूस हो रही है। हम बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हुज़ूर ने अपने क़ीमती वक़्त में से कुछ वक़्त निकाला और यहां टेक्सास तशरीफ़ लाए और अपने ख़्यालात का इज़हार किया और इस बात का हमें विश्वास करवाया कि डरने की कोई बात नहीं, हम सब मजमूई तौर पर केवल अमन के ही ख़ाहां हैं। हम नफ़रतों को दूर करते हुए मुहब्बत के साथ समस्त इन्सानों का इस्तक़बाल करते हैं। यही असल बात है।

एक ख़ातून Dana Pressler अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हम यहां से केवल दो मिनट की दूरी पर रहते हैं और हमारे फ़िर्क़ा की मस्जिद भी यहां से पाँच मिनट की दूरी पर है। हमारे कुछ हम-साए अहमदी मुस्लमान हैं और उनके साथ हमारे बड़े अच्छे दोस्ताना ताल्लुक़ात हैं। जब वह दूसरे लोगों को यहां मस्जिद के बारे में बता रहे थे और उनको विश्वास देहानी करवा रहे थे कि यहां मस्जिद बन रही है और आप लोगों को डरने की ज़रूरत नहीं क्योंकि हम इंतेहापसंद मुस्लमान नहीं बल्कि पुर अमन मुस्लमान हैं, तो ऐसी विश्वास देहानी बड़ी अहमियत की हामिल है।

Joshua Espraza नामी एक मेहमान ने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा आज के इस उद्घाटन की तक़रीब में मुझे और दीगर सीनीयर पादरी हज़रात को दावत दी गई है कि इस तक़रीब में शामिल हों और मज़े-दार खानों में शरीक हों और लोगों से बातचीत का अवसर मिले। मैं इस बात को बहुत सराहता हूँ कि यहां किस तरह हिक्मत के साथ अमन, इत्तिहाद और इन्साफ़ के बारे में बात की गई है। इस बात का एहसास भी हुआ कि ऐसे लोग भी हैं जिनका ताल्लुक़ विभिन्न तहज़ीब-ओ-तमद्दुन से है लेकिन वे भी हमारी ज़िंदगियों में ख़ुदा की मौजूदगी और इन्सानों में बाहमी हमदर्दी का परचार करते हैं और क्योंकि हमारे आमाल का एक दूसरे पर भी असर होता है इसलिए इस तरह मिल बैठना और खाना खाना और बातें करना बहुत ज़रूरी था।

मैं अपनी पत्नी को भी बता रहा था कि यहां मेज़बानी बहुत उम्दा थी। यहां पहुंचते ही प्रत्येक चीज़ आर्गेनाईज़ड लगी। लोगों ने मेज़बानी का हक़ अदा किया, हमारे सवालों के जवाब दिए। खाना बहुत लज़ीज़ था। मुझे यह भी एहसास हुआ कि हम क्यों ऐसी अच्छी मेज़बानी और लोगों को दावत नहीं देते। मुझे यहां आज पहली दफ़ा आने का संयोग हुआ है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि गोया मैं अपने घर पर हूँ। मेरे लिए ये बहुत अनुभव था।

Victoria Espraza नामी एक महिला कहती हैं कि मुझे जो चीज़ यहां सबसे नुमायां लगी वह हुज़ूर का ख़िताब था कि किस तरह मज़हबी इख़तेलाफ़ और विभिन्न नज़रियात के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं। मेरे ख़्याल में यह ऐसी चीज़ है जिसका आजकल बैनुल मज़ाहिब डाइलाग में फ़ुक़दान नज़र आता है और किसी को इतनी हिक्मत और दानाई के साथ इस बारे में बात करते हुए देखकर बहुत ख़ुशी महसूस हुई कि अपने मज़हबी अक़ायद में मतभेदों के बावजूद, समस्त बनीनौ इन्सान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और हमें किस तरह आपस में अमन के साथ और एक दूसरे का एहसास करते हुए रहना चाहिए। आज की तक़रीब और मेज़बानी प्रत्येक लिहाज़ से बहुत उम्दा थी कि किस तरह हमारा ख़्याल रखा गया और सवालात के जवाबात दिए गए, जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। इस सब के लिए हम आप सब के बहुत शुक्रगुज़ार हैं।

एक ख़ातून Beverly McCord साहिबा कहती हैं कि मुझे हमेशा आलमी मज़हबी राहनुमाओं को सुनना अच्छा लगता है जो कि लोगों को नियमित अमन की ज़रूरत, बाहमी मतभेदों के तदारुक और मुहब्बत की तरफ़ बुलाते रहते हैं। मुझे हमेशा ऐसे पैग़ाम सुनकर ख़ुशी होती है। मुझे ज़ाती तौर पर इस जमाअत से कोई भय नहीं और दूसरों के ख़ौफ़ज़दा होने की भी कोई वजह समझ नहीं आती, क्योंकि यह जमाअत तो बहुत मुहब्बत करने वाली, एहसास करने वाली और हमेशा ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाली जमाअत है। अगर किसी को कोई भय हो तब भी इस जमाअत की ख़िदमत-ए-ख़लक़ और फ़लाही कामों को देखकर फ़ौरन दूर होना चाहिए।

डाक्टर Robert Hunt जो प्रकंज़ा स्कूल आफ़ थेवलोजी, सदर्न मैथोडिस्ट यूनीवर्सिटी में ग्लोबल थियोलोजीकल एजूकेशन के डायरेक्टर हैं। उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने जंग के ख़तरात से नबियों की तरह इंज़ार किया है। हुज़ूर ने

इस्लाम के सही अर्थ वर्णन फ़रमाए कि अल्लाह के अहकामात की तामील कर के लोगों से हुस्न-ए-सुलूक करना है। यह नहीं कि लोगों को क़तल करना है।

Brian Harvey जो कि Allen के इलाक़े में जहां मस्जिद वाक़्य है पुलिस के सरबराह हैं। उन्होंने कहा कि दस वर्ष पहले में इस इलाक़े का Police Chief बन गया था और उसी वक़्त से अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने हमारे साथ अच्छे ताल्लुक़ात क़ायम किए। हमारा गहरा ताल्लुक़ है और हम आपस में तआवुन करते हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सरबराह ने अपने मैंबरान को मुक़ामी पड़ोसियों और हुकूमत के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखने के बारे में बड़ी अच्छी तरह सिखाया है।

Vudhi Slabisak एक मुक़ामी हस्पताल में Spine Surgeon हैं। उन्होंने कहा कि मुझे हुज़ूर अनवर के पैग़ाम की जामईयत और दूसरों के लिए मुहब्बत-ओ-अमन के पैग़ाम से हैरत हुई। वे समस्त मज़ाहिब के लोगों को आपस में जोड़ने की सलाहीयत रखते हैं।

आतिफ़ ज़हीर साहिब जो John Hopkins यूनीवर्सिटी में रेडियोलोजी के प्रोफ़ैसर हैं उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने इस तक़रीब और मस्जिद के ज़रीया विभिन्न स्वभाव और विभिन्न मज़ाहिब के लोगों को जमा किया। अब मुझे विश्वास है कि यह मस्जिद कम्यूनिटी को बहुत फ़ायदा देगी और मुक़ामी बाशिंदों को अमन और मुहब्बत की चादर में लपेटेगी। मुझे ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने का शरफ़ हासिल हुआ और उन्होंने इंतेहाई मुफ़ीद बातें वर्णन फ़रमाई थीं। उन्होंने न केवल मुक़ामी मसायल बल्कि दुनियावी मसायल का वर्णन भी फ़रमाया था।

हुज़ूर अनवर से मुलाकात

पुरुषों और महिलाओं की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात थी। उनके चेहरों पर एक ग़ैरमामूली ख़ुशी थी। प्रत्येक की अपनी अपनी भावनाएं थीं। मुलाक़ात करके बाहर निकलते तो एक दूसरे को ख़ुशी के आँसूओं के साथ मुबारकबाद देते। अल्लाह तआला उनके लिए यह ख़ुशियां दाइमी बना दे और ये उन अत्यधिक मुबारक लमहात की हमेशा के लिए हिफ़ाज़त करने वाले हों।

* मुलाक़ात करने वालों में एक दोस्त शब्बीर अहमद साहिब शिकागो से आए थे कहने लगे कि आज हम किस क़दर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है। प्रत्येक इन्सान को यह अवसर नसीब नहीं होता। हमें ये नेअमत और सआदत पाकिस्तान में अल्लाह की ख़ातिर ज़ुलम-ओ-सितम का सामना करने के बाद मिली है।

* एक दोस्त अदील अहमद साहिब डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे मैं आज बहुत ख़ुश हूँ और ख़ुशनसीब भी हूँ कि मेरे बच्चों की ख़ुदा के चुने हुए ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई।

* अंसर हसन साहिब लास से 2046 मील का सफ़र तै कर के मुलाक़ात के लिए आए थे। मुलाक़ात के बाद उन्होंने बताया कि साल 2013 ई. में, मैंने एक ख़ाब देखा था कि मैं हुज़ूर अनवर से एक साहिली इलाक़े के क़रीब मिल रहा था। मैंने यह ख़ाब उस वक़्त देखा था जब मैं पाकिस्तान में था और मेरे अमरीका आने का कोई संभावना भी नहीं थी। लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे अमरीका तक पहुंचा दिया और अब एक साहिली इलाक़े के क़रीब ही मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई है। यह अल्लाह तआला का मुझ पर ऐसा फ़ज़ल है कि मैं जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

* जमात शिकागो से मुलाक़ात के लिए आने वाले दोस्त वक़ास अहमद साहिब ने बताया कि मेरी ख़ुशी की उस समय सीमा न रही कि जब मैं दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर को मालूम था कि मेरे माता कौन हैं। मैं हैरान रह गया क्योंकि यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाक़ात थी।

* उसमान ज़िया जमाअत St. louis से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि हुज़ूर अनवर के बाबरकत वजूद में जलाल है। मैंने नूर ही देखा है।

* सलमान अहमद साहिब जो जमाअत शिकागो से आए थे कहने लगे कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं कुछ वर्णन कर सकूँ। बस यही कहता हूँ कि अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है कि मैंने मुलाक़ात की सआदत पाई है और मैंने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी।

मुलाक़ातों का याः प्रोग्राम आठ बज कर बीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद 8:30 बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

1 अक्तूबर 2022 ई शनिवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बज कर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई। यहां अमरीका के इस यात्रा के दौरान दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से रोज़ाना बज़रीया Fax और ई मेल के ज़रीया ख़ुतूत और रिपोर्टस मौसूल होती हैं। यहां अमरीका के अहबाब की तरफ़ से ख़ुतूत और मुख़्तलिफ़ शोबा जात की रिपोर्टस भी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश होती हैं। हुज़ूर अनवर इन ख़ुतूत और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

एक लेखक महिला को इंटरव्यू

प्रोग्राम के मुताबिक़ पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां "lake county newssun" अख़बार की एक लेखिका महिला yadira sanchez olson साहिबा हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं।

इस लेखिका ने पहला सवाल यह किया कि इस दौर में जब प्रत्येक तरफ़ बहुत ज़्यादा ख़ौफ़, जरायम, बे-घर होना और ख़ुराक की कमी और अदम तहफ़्फ़ुज़ है तो आपका क्या पैग़ाम है ताकि ख़ौफ़ कम हो? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : बानी सिलसिला अहमदिया ने फ़रमाया है कि मेरे आने का उद्देश्य लोगों को उनके ख़ालिक़ के क़रीब करना है। उनके पैदा करने वाले तक पहुंचाना है और दूसरा यह कि दुनिया के लोगों को समझाना है कि वह आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अगर आप लोगों को उनके हुक़ूक़ देते हैं तो फिर कोई जुर्म या बे-घर होना या ख़ुराक का अदम तहफ़्फ़ुज़ नहीं होना चाहिए।

सहाफ़ी ने सवाल किया कि आप नौजवानों को अपने ईमान पर क़ायम रहने के लिए क्या पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नौजवानों को अपने बुज़ुर्गों की दीन और ईमान की बातें सुननी चाहिए और उनसे दीन और ईमान की बारीकियां सीखनी चाहिए। बच्चे के लिए माता पिता से सब कुछ सीखना एक फ़ित्री अमल है। माता पिता से दीन भी सीखना चाहिए।

सहाफ़ी के इस सवाल के जवाब में कि "क्या आपके ख़्याल में समस्त मज़ाहिब और लोगों के लिए अमन के हुसूल का कोई फ़ार्मूला है? क्या समस्त मज़ाहिब मिलकर अमन के लिए काम कर सकते हैं? "हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर दुनिया यह समझ ले कि समस्त लोगों को अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और हमारी पैदाइश का उद्देश्य एक दूसरे को मारना या तबाह करना नहीं है और यह कि समस्त मज़ाहिब अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं तो फिर आप ये भी समझ लेंगी कि समस्त अंबिया और समस्त मज़ाहिब के संस्थापक ने भविष्यवाणी की थी कि आख़िरी ज़माना में एक नबी आएगा जो समस्त मज़ाहिब को मुत्तहिद कर देगा। हमारा विश्वास है कि वह शख़्स जिसके बारे में समस्त मज़ाहिब की संस्थापकों ने भविष्यवाणी की है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरे पैरोकार इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को भूल जाऐंगे फिर उस वक़्त एक मुस्लेह आएगा जो मेरी उम्मत में से होगा और हमारा यक़ीन है कि ये मुस्लेह सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं।

(शेष आगे)

रिपोर्ट माननीय अब्दुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकीलुल् तबशीर् लंदन, यू.के)
(उद्धृत अख़बार बदर उर्दू 24 नवंबर 2022)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 13 June 2024 Issue No. 24

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad